दीक्षान्त

❑ आलोक श्रीवास्तव

दीक्षा एक ऐसी पारस्परिक अन्तर्क्रिया है जिसमें चेतना का प्रवर्तन होता है । इस चेतना की निष्पत्ति यदि ऐसी दृष्टि में होती है जो प्रश्नाकुल हो तो ध्वंस और सृजन के नये सोपान खुलते हैं । यह प्रत्याशा उतनी ही स्वाभाविक है जितनी फूल की फल में परिणति । दीक्षा यदि ज्ञान की दुनियां में प्रवेश है तो दीक्षान्त ज्ञान की रोशनी लिए विराट् जगत में पुनर्प्रवेश ।

आखिरकार लौट आये तुम
तुम्हारा लौटना किसी सिद्धार्थ का
निरापद वनों से
जनपदों की ओर आना नहीं है

तुम्हारे पास दुखों का कोई निराकरण भी नहीं
खाली हाथ लौटे हो तुम
वैसी-की-वैसी आत्मा
वैसी-की-वैसी देह

सवाल अब भी काबिज है
दुख अब भी मूर्त

फिर भी बधाई लो
न हो तुम्हारा लौटना बुद्ध की तरह
न हो जगतव्यापी दुखों का हल
पर लौटे हो तुम
उन्नतमाथ
प्रश्नचिन्हों से घिरे

और मैं जानता हूँ
सुख के बारे में किये तुम्हारे प्रश्न
बहुत वाजिब हैं

निवारण के साथ लौटा व्यक्ति
मिथक होता जाता है तो
सवालों के साथ लौटा मनुष्य
इतिहास !

◆